सतर्कता जागरूकता सप्ताह-2015

सीएसआईआर - केन्द्रीय इलेक्ट्रॉनिकी अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान (सीरी) में केंद्रीय सतर्कता आयोग, भारत सरकार एवं वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर), नई दिल्ली के दिशा-निर्देशानुसार **26 से 31 अक्टूबर 2015** तक **'सतर्कता जागरूकता सप्ताह-2015'** का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम अखंड एवं एकीकृत भारत के प्रतीक तथा स्वतंत्र भारत के प्रथम गृहमंत्री एवं अमर स्वतंत्रता सेनानी **लौहपुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल** की याद में उनके जन्म दिवस के उपलक्ष्य में प्रतिवर्ष आयोजित किया जाता है। सप्ताह के दौरान आयोजित किए गए विभिन्न कार्यक्रमों का विवरण निम्नवत है –

शपथ ग्रहण

आयोजन का उदघाटन 26 अक्टूबर 2015 को प्रात: 11 बजे संस्थान के सभागार में आयोजित समारोह में किया गया। इस अवसर पर संस्थान के **निदेशक डॉ चंद्रशेखर** ने सभी सहकर्मियों को अपने क्रियाकलापों में ईमानदार, सजग व सतर्क रहने की शपथ दिलाई।

सतर्कता जागरूकता की शपथ दिलाते हुए
डॉ चंद्रशेखर, निदेशक, सीएसआईआर-सीरी

सतर्कता जागरूकता की शपथ ग्रहण करते हुए सहकर्मी

शपथ

"हम, भारत के लोक सेवक, सत्यनिष्ठा से प्रतिज्ञा करते हैं कि हम अपने कार्यकलापों के प्रत्येक क्षेत्र में ईमानदारी और पारदर्शिता बनाए रखने के लिए निरंतर प्रयत्नशील रहेंगे। हम यह प्रतिज्ञा भी करते हैं कि हम जीवन के प्रत्येक क्षेत्र से भ्रष्टाचार उन्मूलन करने के लिए निर्बाध रूप से कार्य करेंगे। हम अपने संगठन के विकास और प्रतिष्ठा के प्रति सचेत रहते हुए कार्य करेंगे। हम अपने सामूहिक प्रयासों द्वारा अपने संगठनों को गौरवशाली बनाएँगे तथा अपने देशवासियों को सिद्धांतों पर आधारित सेवा प्रदान करेंगे। हम अपने कर्तव्य का पालन पूर्ण ईमानदारी से करेंगे और भय अथवा पक्षपात के बिना कार्य करेंगे।"

सहकर्मियों को संबोधित करते हुए निदेशक महोदय

अपने संक्षिप्त उदबोधन में डॉ चंद्रशेखर ने सुशासन में सतर्कता की भूमिका व महत्व पर प्रकाश डालते हुए मानवीय मूल्यों के महत्व को रेखांकित किया। शारीरिक स्वास्थ्य के लिए किए जाने वाले प्रयासों और निवारक सतर्कता की तुलना करते हुए उन्होंने कहा कि जिस प्रकार स्वस्थ रहने के लिए पहले से ही व्यायाम, उचित आहार आदि के माध्यम से सावधानी बरतने की आवश्यकता होती है उसी प्रकार सार्वजनिक या कार्यालयी जीवन में निवारक सतर्कता का महत्व है। उन्होंने कहा कि कोई भी लिखित नियम या शब्द कभी भी अस्पष्ट नहीं होता। उन्होंने कहा कि निवारक सतर्कता पर अमल करते हुए हमें पूरी तरह रूढ़िवादी दृष्टिकोण नहीं अपनाना चाहिए। ऐसा करने से या डरते हुए कार्य करने से हमारा कार्य प्रभावित होता है, ऐसी स्थिति में हम कोई भी काम नहीं कर सकेंगे। उन्होंने बताया कि निवारक सतर्कता का आशय यह है कि हम नियमों को भली-भाँति समझ लें और यह ध्यान रखें कि उन्हें लागू करने में हमारा या किसी का कोई व्यक्तिगत हित तो नहीं है। हमें सार्वजनिक हित को देखते हुए निर्णय लेना चाहिए। उन्होंने कहा कि किसी विषय या मामले में निर्णय लेते समय समिति गठित करने के पीछे भी यही उद्देश्य होता है क्योंकि उसमें कई व्यक्ति मिल कर निर्णय लेते हैं जिससे किसी का व्यकितगत हित सिद्ध होने की संभावना नहीं होती और गलत निर्णय लेने से हम बच जाते हैं। इसलिए समिति के माध्यम से निर्णय

लेने की व्यवस्था भी एक प्रकार से निवारक सतर्कता ही है।

अपने संबोधन में उन्होंने यह भी कहा कि हमें नियमों के शब्दश: या अक्षरश: पालन के स्थान पर उसके भाव या आशय पर भी ध्यान देना चाहिए। उन्होंने कहा कि नियम बनाए जाने के पीछे उसके उद्देश्यों पर भी ध्यान देना ज़रूरी है। संस्थान की कार्यप्रणाली की प्रशंसा करते हुए उन्होंने कहा कि यह बहुत अच्छी बात है कि हमारे संस्थान में किसी विषय पर निर्णय लेते समय सभी संबद्ध पक्ष, चाहे वह प्रशासन हो, भंडार एवं क्रय हो या वित्त एवं लेखा हो, उसमें शामिल होते हैं, इससे किसी पक्ष या दृष्टिकोण के छूटने की संभावना नहीं होती। अपने संबोधन के अंत में उन्होंने कहा कि हमें सतर्कता और जागरूकता जैसे शब्दों से भयभीत होने की आवश्यकता नहीं है बल्कि हमें सतर्क रहते हुए मिलजुल कर दूसरों के कुत्सित प्रयासों के लिए स्वयं को उपयोग होने से भी बचना है तथा सही दिशा में कार्य करना है । उन्होंने आशा व्यक्त की कि हम इस परंपरा को जारी रखते हुए ऐसी कार्य संस्कृति स्थापित करेंगे जिसमें संस्थान के हित में सभी निर्णय किसी एक व्यक्ति के स्थान पर सहयोगात्मक विधि से मिलजुल कर लिए जाएँ। इससे निश्चित रूप से हमारी कार्य संस्कृति व वातावरण और अधिक बेहतर होगा।

उदघाटन सत्र का संचालन करते हुए
श्री महेन्द्र सिंह, अनुभाग अधिकारी

उदघाटन सत्र का संचालन करते हुए **श्री महेन्द्र सिंह, अनुभाग अधिकारी ने** स्वतंत्रता के उपरान्त भारत की एकता व अखंडता के लिए लौहपुरुष सरदार पटेल के योगदान को याद किया तथा कहा कि पूरे देश के केंद्रीय सरकार के कार्यालयों में इस अवधि में सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन किया जाता है। इस अवसर पर उन्होंने सप्ताहपर्यन्त आयोजित किए जाने वाले कार्यक्रमों की रूपरेखा पर प्रकाश डाला।

उन्होंने सहकर्मियों को भारत के राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री तथा मुख्य सतर्कता आयुक्त का संदेश पढ़ कर सुनाया। अपने संबोधन के अंत में उन्होंने सभी सहकर्मियों से सप्ताह के दौरान आयोजित किए जाने वाले कार्यक्रमों में बढ़-चढ़ कर भाग लेने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि यदि हमें कभी भी कुछ गलत होता दिखाई दे तो हमें संस्थान व देश के सजग प्रहरी होने के नाते उसकी जानकारी सक्षम प्राधिकारी को अवश्य देनी चाहिए।

प्रतियोगिताएँ

सप्ताह के दौरान संस्थान में विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। प्रतियोगिताओं में प्रतिभागिता के लिए हिंदी अथवा अंग्रेजी दोनों माध्यमों की छूट दी गई थी।

सप्ताहपर्यन्त आयोजित की गई प्रतियोगिताओं तथा उनके विजेताओं का विवरण निम्नवत है :

1. वाद विवाद दिनांक 27.10.2015

विषय : "निवारक सतर्कता सुशासन का एक उपकरण है"

विजेता (पक्ष)

प्रथम : श्री जितेन्द्र गुप्ता, सहायक (वि-ले) ग्रेड1

द्वितीय : श्री नीरज कुमार, वैज्ञानिक

तृतीय : 1.श्री पीयुष गोयल,पीजीआरपीई 2015
2.श्री सुनील उदयवाल, सहायक(भं- क्र)1

विजेता (विपक्ष)

प्रथम : श्री मुरली धर, सहायक(भं- क्र) ग्रेड 1

द्वितीय : श्री अरविंद सिंह जादौन, पीएफ

तृतीय : श्री वरुण पठानिया, पीएफ

2. निबंध लेखन दिनांक 28.10.2015

विषय : "सुशासन में प्रौद्योगिकी का उपयोग"

प्रथम :1. श्री ओमप्रकाश ठाकुर, पीजीआरपीई2015
2. श्री सुनील उदयवाल,सहायक(भं-क्र) ग्रेड1

द्वितीय : श्री जितेन्द्र गुप्ता, सहायक (वित्त एवं लेखा) ग्रेड1

तृतीय :1.श्री पीयुष गोयल, पीजीआरपीई 2015
2. श्रीचंद्रशेखर शर्मा, तकनीकी सहायक

समापन सत्र एवं पुरस्कार वितरण

संस्थान में दिनांक 30.10.2015 को आयोजित किए गए समापन समारोह में संस्थान के **निदेशक डॉ चंद्रशेखर** ने सप्ताह के दौरान आयोजित की गई प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए और सभी विजेताओं को बधाई दी। इस अवसर पर एक सजग नागरिक के दायित्वों पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने बताया कि भ्रष्टाचार पर नियंत्रण में सरकार और नागरिकों दोनों की ही महत्वपूर्ण भूमिका है।

विजेताओं को पुरस्कृत करते हुए डॉ चंद्रशेखर,
निदेशक, सीएसआईआर-सीरी

समापन सत्र के अवसर पर उन्होंने कहा कि देश भर के सरकारी कार्यालयों में सतर्कता सप्ताह आयोजन के प्रति सरकार का उद्देश्य है कि हम अपने दैनिक जीवन में सतर्क व जागरूक रहें। इस अवसर पर उन्होंने हमारी राष्ट्रीय एकता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यह सर्वविदित है कि हमारे देश में जितनी विविधता है वह पूरे विश्व में किसी भी देश में नहीं है। हमारी एकता व अखंडता हमारी बहुत बड़ी शक्ति है। अधिकतर अन्य देशों में भाषायी, जातीय, धार्मिक आदि अन्य आधारों पर देश की सीमा निर्धारित हुई है परंतु हमारे साथ ऐसा नहीं है। हमारे देश में अनेक भाषा-भाषी, अनेक जातियों और अनेक धर्मों के लोग रहते हैं । हमारे देश की संस्कृति ने बाहर से आने वाले सभी धर्मों, संप्रदायों, भाषाओं, व्यवसायों के लोगों को समाविष्ट और अपनी संस्कृति में आत्मसात किया और इस विविधता को अपनी शक्ति बनाते हुए अपना विकास किया। निश्चित रूप से यह हमारी बहुत बड़ी शक्ति और उपलब्धि है।

उन्होंने कहा कि हमारी यह मिल-जुल कर रहने की जीवन शैली अत्यंत प्राचीन और वैदिक काल की है। वैदिक काल में भी हमारे देश में छः दर्शनों के अनुयायी रहते थे। डॉ चंद्रशेखर ने कहा कि हमारे संत-महात्माओं का मानना था कि कोई भी देश या समाज जितना व्यापक और समावेशी होगा वह उतना ही सामाजिक, सांस्कृतिक या अन्य रूप से समृद्ध और सशक्त होगा। उन्होंने कहा कि कोई भी व्यक्ति या समाज पूर्णतया स्वावलंबी नहीं हो सकता। हितों के लिए परस्पर संघर्ष किसी भी समाज में हो सकता है परंतु इससे हमारे इस विशाल देश की स्थिरता या स्थायित्व किसी प्रकार प्रभावित नहीं हुआ, और यह बहुत बड़ी बात है। उन्होंने कहा कि इस प्रकार के परस्पर वाद-विवाद या छुट-पुट संघर्षों से नई चीज़ें या नए सामाजिक सिद्धांत विकसित होते हैं जिनसे भविष्य की राह निकलती है और विकास की गति निर्धारित होती है। उन्होंने कहा कि अमेरिका जैसे विश्व के अनेक देशों ने अनेकता में एकता की हमारी अवधारणा को न केवल स्वीकार किया अपितु इसे अपनाया। हमारी यह विशेषता विश्व के अन्य देशों के लिए एक अनुकरणीय उदाहरण है। उन्होंने कहा कि हमें अपनी इस विशेषता पर गर्व होना चाहिए और साथ ही निहित स्वार्थों के कारण हमारी इस राष्ट्रीय एकता को नुकसान पहुँचाने के कुछ देशों के प्रयासों से सावधान रहना होगा। अंत में उन्होंने कहा कि हम सभी इन बातों को ध्यान में रखते हुए आदर्श समाज की स्थापना करने में अपना योगदान देंगे तभी इस सप्ताह का आयोजन सार्थक सिद्ध होगा।

इससे पूर्व संस्थान के प्रशासनिक अधिकारी **श्री रोहित गुप्ता** ने सप्ताहपर्यन्त आयोजित कार्यक्रमों की जानकारी दी। अपने संक्षिप्त उदबोधन में उन्होंने सभी सहकर्मियों से अपने कार्यालयी तथा अन्य कार्यों में सतर्क व जागरूक रहने का आह्वान किया तथा प्रतियोगिताओं के विजेताओं को बधाई दी।

अंत में आयोजन समिति के अध्यक्ष **डॉ. एस अली अकबर, मुख्य वैज्ञानिक** ने धन्यवाद ज्ञापित करते हुए संस्थान के निदेशक, आयोजन समिति तथा सप्ताहपर्यन्त आयोजित इस कार्यक्रम में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग देने वाले सभी सहकर्मियों के प्रति आभार व्यक्त किया।

धन्यवाद ज्ञापित करते हुए आयोजन समिति के अध्यक्ष
डॉ. एस अली अकबर, मुख्य वैज्ञानिक

समापन सत्र एवं पुरस्कार वितरण समारोह का संचालन **श्री महेन्द्र सिंह,** अनुभाग अधिकारी ने किया। उन्होंने सभी पुरस्कार विजेताओं को बधाई देते हुए सभी सहकर्मियों का आह्वान किया कि सतर्कता जागरूकता की शपथ की मूल भावना का ध्यान रखते हुए अपने कर्तव्य के प्रति समर्पित भाव से कार्य करें। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि हमें निवारक सतर्कता को अपने दैनिक जीवन में अपनाते हुए और सतर्क व जागरूक रहना होगा और संस्थान के उद्देश्यों की पूर्ति में निरंतर अपना योगदान देना होगा।

इस प्रकार संस्थान में **'सतर्कता जागरूकता सप्ताह-2015'** संपन्न हुआ।